किताबों का बक्सा

घर में चारों तरफ़ खुशी का वातावरण था। आज सीता का बेटा बहू लेकर आया था। दरवाजे पर आरती उतार कर सीता ने अपनी बहू सविता का माथा चूम लिया। बारात से लौटे सभी लोग थके थे। लेकिन सविता को देखने के लिए औरतों की भीड़ लगी थी। गांव में पहली बी. ए. पास बहू आई थी। सीता के बेटे हरि की एक ही शर्त थी। पढ़ी-लिखी लड़की से ही शादी करूंगा। वह खुद भी शिक्षित था। उसने खेती बाड़ी में ऊंची शिक्षा पाई थी। अब गांव में रह कर अपने खेतों की देखभाल करता था।

बहुत ढूंढने के बाद पास के ज़िले के मास्टर जी की बेटी सविता पसंद आई। वह भी स्कूल में अध्यापिका थी। उसकी भी एक शर्त थी। शादी में कोई दहेज़ नहीं दिया जाएगा। हरि को इसमें कोई एतराज नहीं था। माता-पिता को ज़रूर थोड़ा बुरा लगा। पर हरि की इच्छा देख कर वे दोनों भी मान गए। हरि के माता-पिता दोनों स्वभाव से सीधे लोग थे। परंतु गांववालों के तानों से डरते थे।

जैसे ही बहू ने घर में कदम रखा औरतें उसके चारों तरफ घिर आईं। उसके हाथ पकड़-पकड़ कर चूड़ियों के तोल का अंदाज़ा लगाने लगीं। कुछ ने उसकी साड़ी, गले के हार और बुंदों के बारे में अपनी राय दी। कमरे में इतना शोर हो रहा था कि कुछ भी सुनाई देना मुश्किल था। इतने में कौशल्या चाची की "हाय राम" ने सबका ध्यान

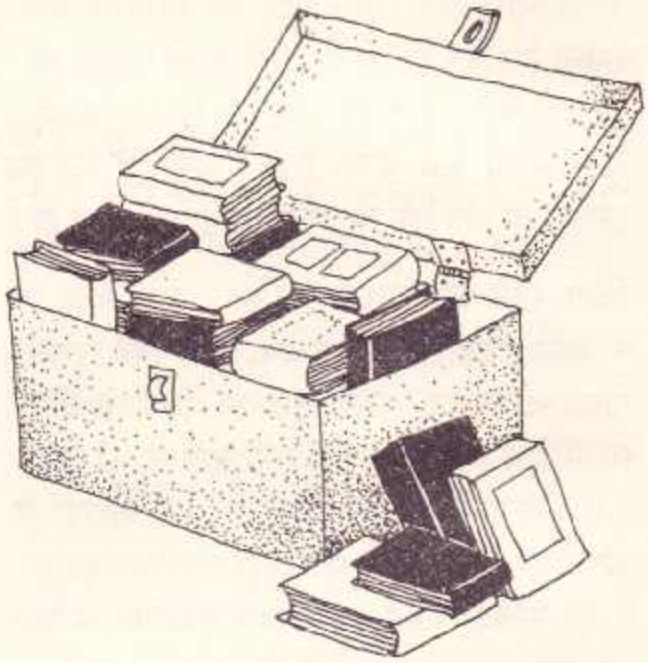

उनकी तरफ़ खींच लिया। चाची ने बड़े नाटकीय तरीके से बड़ी-बड़ी आंखें फाड़ते हुए कहा—

"अरी, जानती हो उस बड़े बक्से में बहू क्या लाई है?"

"उसके कपड़े लत्ते, बर्तन भांडे होंगे, और क्या होगा," रामू की मां बोली।

"अरी नहीं बहिनी, बहू दहेज़ में किताबें लाई है।"

सारी औरतें खिलखिला कर हंस पड़ीं। रामू की मां ने घाव पर नमक छिड़कते हुए कहा।

"चलो, सीता रद्दी वाले को बेचेगी तो उसे दस बीस तो मिल ही जाएंगे।"

फिर एक ज़ोरदार ठहाका लगा।

सविता सब कुछ सुन रही थी। उसकी आंखों में दुःख के आंसू छलक आए। मन में तो आया कि इन औरतों को कोई करारा जवाब दे। लेकिन चुप रही। वह नए जीवन की शुरुआत झगड़े से नहीं करना चाहती थी। फिर ये औरतें तो अनजान थीं। वही सब कह रही थीं जो बचपन से सुनती आई थीं। उन्हें शिक्षा की दौलत का मोल कहां मालूम था।

सीता ने भी औरतों के कड़वे बोल सुने थे। उसका मन भी बहुत दुःखी था। गुस्से में भर कर पति से बोली—

"इस लड़की में कौन से हीरे जड़े हैं जो खाली हाथ इसे ले आए। अब सुनो पास-पड़ौस वालों की बातें।"

"मां, तुम लोगों की बातों की परवाह क्यों करती हो। मां, गहने में जड़े हीरे तो शरीर की आंखों से दिख जाते हैं। इंसान में जड़े हीरों को मन की आंखों से देखा जाता है। इंसान के गुण ही उसके हीरे हैं। समझीं?" जवाब बेटे ने दिया।

* * *

दो चार सप्ताह तक सारे गांव में यही चर्चा रही। धीरे-धीरे बात ठंडी पड़ गई। सब अपने-अपने काम में मग्न हो गए। इधर सविता के स्वभाव ने घर में सबका मन मोह लिया था। उसने अपना तबादला गांव के स्कूल में ही करा लिया था। स्कूल के सभी बच्चे उसे बहुत चाहने लगे। वह स्कूल की प्यारी सविता दीदी बन गई।

सविता ने देखा गांव में ऐसी कई बड़ी उम्र की लड़कियां हैं जिनके पतियों ने उन्हें घर से निकाल दिया है। या वे खुद घर छोड़ कर भाग आई हैं। सविता ने उनके लिए शाम को एक कक्षा शुरू की। वहां उन्हें लिखना-पढ़ना, सिलाई करना और दूसरे हुनर सिखाए जाते थे। कुछ महीनों में वे लड़कियां अपनी रोज़ी-रोटी खुद कमाने लगीं। सविता की मदद से दो लड़कियों ने शहर जाकर मेकेनिक की ट्रेनिंग भी हासिल की।

यह सब देख कर औरतें भी शाम की कक्षा में आने लगीं। कोई अपने बच्चे की समस्या बताती। कुछ आपसी घरेलू झगड़ों पर उसकी राय लेतीं और कुछ औरतें लिखना-पढ़ना सीखतीं।

सविता की शाम की कक्षा ने एक बड़े महिला मंडल का रूप ले लिया। वही औरतें जो पहले दिन उसकी किताबों के बक्से पर ताने कस रही थीं, अब उससे किताबें मांग कर पढ़ने लगीं। बड़े धीरज और मेहनत से सविता ने नए परिवार और नए गांव में अपने लिए आदर की जगह बना ली। सविता गांव के हर परिवार के दुःख दर्द में काम आती थी। सबकी मदद करती और उन्हें प्यार देती थी।

महिला मंडल का एक साल पूरा होने पर सबने मिल कर उत्सव मनाया। खूब नाच-गाना हुआ। गांव के मर्द भी आए। कौशल्या चाची ने मंच पर खड़े होकर कहा—

"मैं इतनी बूढ़ी हो गई पर मुझे मनुष्य को पहचानना नहीं आया। सविता बेटी में जो गुण हैं उनका मुकाबला पत्थर के हीरे-मोती नहीं कर सकते। आज मैं सबके सामने कहना चाहती हूं कि हमारे गांव की हर लड़की सविता जैसी बने और दहेज में गुणों की दौलत ले कर जाए।"

"साथ ही किताबों का बक्सा भी," भीड़ में से रामू की मां बोली। सभी लोग प्रसन्नता से हंसने लगे। □